90 छंद कहते हैं: यीशु ईश्वर नहीं है

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख](#) [तुलनात्मक धर्म](#) [यीशु](#)

द्वारा: Adenino Otari

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

चार इंजील में यीशु को यह कहते हुए बताया गया है, *"???? ??? ?? ????????! ?? ????? ?? ????? ?????????"*

'पुत्र' शब्द का शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जा सकता क्योंकि बाइबल में ईश्वर अपने कई चुने हुए सेवकों को 'पुत्र' के रूप में संबोधित करता है। इब्रानियों का मानना था कि ईश्वर एक है, और किसी भी शाब्दिक अर्थ में उसकी न तो पत्नी थी और न ही बच्चे थे। इसलिए, यह स्पष्ट है कि अभिव्यक्ति 'ईश्वर का पुत्र' का अर्थ केवल 'ईश्वर का दास' है; जो, वफादार सेवा के कारण, एक पुत्र के रूप में ईश्वर के करीब और प्रिय था, जैसा एक पुत्र अपने पिता के लिए होता है।

ग्रीक या रोमन पृष्ठभूमि से आने वाले ईसाइयों ने बाद में इस शब्द का दुरुपयोग किया। उनकी विरासत में, 'ईश्वर का पुत्र' एक देवता के अवतार या पुरुष और महिला देवताओं के बीच एक भौतिक मिलन से पैदा हुए व्यक्ति को दर्शाता है। इसे **प्रेरितों के काम 14: 11-13** मे देखा जा सकता है, जहां हम पढ़ते हैं कि जब पौलुस और बरनबास ने तुर्की के एक शहर में प्रचार किया, तो अन्यजातियों ने दावा किया कि वे देहधारी देवता हैं। वे बरनबास को रोमन देवता ज़ीउस और पॉल को रोमन देवता हर्मीस कहते हैं।

इसके अलावा, नए नियम का यूनानी शब्द जिसका अनुवाद 'सोन' किया गया है, वह है 'पियास' और 'पीडा' जिसका अर्थ है 'दास' या 'दास के अर्थ में पुत्र। इनका अनुवाद यीशु के संदर्भ में 'पुत्र' और बाइबल के कुछ अनुवादों में अन्य सभी के संदर्भ में 'दास' के रूप में किया गया है। इसलिए, अन्य छंदों के अनुरूप, यीशु केवल यह कह रहे थे कि वह ईश्वर के सेवक हैं।

ट्रिनिटी के साथ अतिरिक्त समस्याएं

एक ईसाई के अनुसार, प्रलोभन और पीड़ा को समझने के लिए ईश्वर को मानव रूप लेना पड़ा, लेकिन यह विचार यीशु के किसी भी स्पष्ट शब्दों पर आधारित नहीं है। इसके विपरीत, मनुष्य के पापों को समझने और क्षमा करने में सक्षम होने के लिए ईश्वर को परीक्षा में पड़ने और पीड़ित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह मनुष्य का सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता है। यह छंद में व्यक्त किया गया है:

'तब ईश्वर ने कहा, मैं ने निश्चय अपनी प्रजा के मिस्र देश के दुःख को देखा है, और उनके काम करनेवालों के कारण मैं ने उनकी दुहाई सुनी है; क्योंकि मैं उनकी पीड़ा जानता हूं।' **(निर्गमन 3:7)**

यीशु के प्रकट होने से पहले ईश्वर ने पाप को क्षमा कर दिया, और वह बिना किसी सहायता के क्षमा करना जारी रखता है। जब एक विश्वासी पाप करता है, तो उसे क्षमा प्राप्त करने के लिए ईमानदारी से पश्चाताप करना चाहिए। वास्तव में, यह सभी मानवजाति को ईश्वर के सामने खुद को दीन करने और बचाने के लिए पेश किया जाता है।

'और मेरे सिवा और कोई ईश्वर नहीं है; एक न्यायी ईश्वर और एक उद्धारकर्ता; मेरे अलावा कोई नहीं है। मेरी ओर दृष्टि कर, और पृथ्वी के सब छोर से उद्धार पाओ; क्योंकि मैं ईश्वर हूं, कोई और नहीं है। '**(यशायाह 45:21-22, योना 3:5-10)**

बाइबल में, मनुष्य सीधे पश्चाताप करने वाले ईश्वर से सच्चे मन से किए गए पश्चाताप के द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त कर सकता है। यह हर समय और हर जगह सच है। प्रायश्चित प्राप्त करने में यीशु द्वारा निभाई जाने वाली तथाकथित अंतर्विभागीय भूमिका की कभी भी आवश्यकता नहीं रही है। तथ्य अपने बारे में स्वयं ही बताते हैं। ईसाई विश्वास में कोई सच्चाई नहीं है कि यीशु हमारे पापों के लिए मर गया और उद्धार केवल यीशु के माध्यम से है। यीशु से पहले के लोगों के उद्धार के बारे में क्या? यीशु की मृत्यु पापा से प्रायश्चित नहीं दिलाती, न ही यह बाइबल की भविष्यवाणी की पूर्ति है।

ईसाइयों का दावा है कि ईसा के जन्म के समय ईश्वर के मानव रूप में अवतार लेने का चमत्कार हुआ था। यह कहना कि ईश्वर वास्तव में एक मनुष्य बन गया है, अनेक प्रश्नों को आमंत्रित करता है। आइए हम मनुष्य-ईश्वर यीशु के बारे में निम्नलिखित पूछें:

*खतना के बाद उनकी चमड़ी का क्या हुआ **(लूका 2:21)**? क्या यह आकाश की ओर चला गया, या यह किसी भी मानव के चमड़े के तरह विघटित हो गया?

*उसके जीवनकाल में उनके बालों, नाखूनों और घावों से बहे खून का क्या हुआ? क्या उनके शरीर की कोशिकाएँ आम इंसानों की तरह मर गईं? यदि उनका शरीर वास्तव में मानव रूप में कार्य नहीं करता है, तो वह एक वास्तविक मनुष्य और सच्चा ईश्वर नहीं हो सकते हैं। फिर भी, यदि उसका शरीर मनुष्य की तरह कार्य करता है, तो यह देवत्व के किसी भी दावे को अमान्य कर देगा। ईश्वर के किसी भी अंग, यहां तक कि अवतार के लिए, किसी भी तरह से सड़ना और फिर भी ईश्वर माना जाना असंभव है। चिरस्थायी, एक ईश्वर, संपूर्ण या आंशिक रूप से, मरता नहीं, और न ही विघटित होता है: 'क्योंकि मैं, ईश्वर, कभी नहीं बदलता।' **(मलाकी 3:6)**

क्या यीशु का शरीर उसकी मृत्यु के बाद सुरक्षित रूप से जीवित रहा?

जब तक यीशु का शरीर उसके जीवनकाल में कभी भी 'क्षय' नहीं हुआ, तब तक वो ईश्वर नही हो सकते, लेकिन यदि वह 'क्षय' नहीं हुए, तो वह वास्तव में मानव नहीं थे।

बाइबल कहती है कि ईश्वर मनुष्य नहीं है

'ईश्वर मनुष्य नहीं है' (**गिनती 23:19**)

'क्योंकि मैं ईश्वर हूं, मनुष्य नहीं' (**होशे 11:9**)

बाइबिल में यीशु को कई बार मनुष्य कहा गया है

'एक आदमी जिसने तुमसे सच कहा है' (**यूहन्ना 8:40**)

''यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का ईश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो ईश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखिलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।' **(प्रेरितों के काम 2:22)**

'जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है' **(प्रेरितों के काम 17:31)**

'मनुष्य यीशु मसीह' (**तीम 2:5**)

बाइबल कहती है कि ईश्वर मनुष्य का पुत्र नहीं है

'ईश्वर न तो मनुष्य है और न ही मनुष्य का पुत्र' (**गिनती 23:19**)

बाइबल अक्सर यीशु को 'मनुष्य का पुत्र' या 'मनुष्य का पुत्र' कहती है

'मनुष्य का पुत्र वैसा ही होगा' (**मत्ती 12:40**)

'क्योंकि मनुष्य का पुत्र आने वाला है' (**मत्ती 16:27**)

'जब तक वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देखें.' (**मत्ती 28**)

'परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र के पास अधिकार है' (**मरकुस 2:10**)

'क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है' (**यूहन्ना 5:27**)

इब्रानी शास्त्रों में, 'मनुष्य का पुत्र' भी कई बार लोगों के बारे में बात करने के लिए प्रयोग किया जाता है **(अय्यूब 25:6; भजन 80:17; 144:3; यहेजकेल 2:1; 2:3; 2:6-8; 3:1-3)**

चूंकि ईश्वर पहले यह कहकर स्वयं का खंडन नहीं करेगा कि वह मनुष्य का पुत्र नहीं है, फिर मनुष्य बनकर जिसे 'मनुष्य का पुत्र' कहा जाता है, उसने ऐसा नहीं किया होता। याद रखें ईश्वर भ्रम के लेखक नहीं हैं। साथ ही, यीशु सहित मनुष्यों को 'मनुष्य का पुत्र' कहा जाता है, विशेष रूप से उन्हें ईश्वर से अलग करने के लिए, जो बाइबल के अनुसार 'मनुष्य का पुत्र' नहीं है।

बाइबल कहती है कि यीशु ने इनकार किया कि वह ईश्वर है

यीशु ने एक आदमी से बात की, जिसने उसे 'अच्छा' कहा था, और यीशु ने उससे कहा, 'तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो? केवल ईश्वर के सिवा कोई अच्छा नहीं है।' **(लूका 18:19)**

उस ने उस से कहा, तुम मुझसे क्यों पूछ रहे हो कि क्या अच्छा है? ईश्वर ही है जो अच्छा है; परन्तु यदि तुम जीवन में प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं को मानो।' **(मत्ती 19:17)**

यीशु ने लोगों को यह नहीं सिखाया कि वह ईश्वर है

यदि यीशु लोगों से कह रहा होता कि वह ईश्वर है, तो वह उस व्यक्ति की प्रशंसा करता। इसके बजाय, यीशु ने उसे डांटा, यह इनकार करते हुए कि वह अच्छा नही है, अर्थात, यीशु ने इनकार किया कि वह ईश्वर है।

बाइबल कहती है कि ईश्वर यीशु से बड़ा है

'मेरा पिता मुझ से बड़ा है'**(यूहन्ना 14:28)**

'मेरा पिता सब से बड़ा है' **(यूहन्ना 10:29)**

यदि ईश्वर उससे बड़ा है तो यीशु ईश्वर नहीं हो सकता। ईसाई विश्वास है कि पिता और पुत्र समान हैं, जो यीशु के स्पष्ट शब्दों से बिल्कुल विपरीत है।

यीशु ने कभी भी अपने शिष्यों को उसकी आराधना करने का निर्देश नहीं दिया

'जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो; हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए।' **(लूका 11:2)**

'उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे: मैं तुम से सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे' **(यूहन्ना 16:23)**

'परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है' **(यूहन्ना 4:23)**

यदि यीशु ईश्वर होते, तो वह स्वयं की पूजा करने को कहते

लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, इसके बजाय उन्होंने आकाश में ईश्वर की आराधना की, इसलिए, वह ईश्वर नहीं थे।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/10454

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।